Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2018-2020 R.N.I. No. 72014/99 Posted at New Delhi PSO Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

अज्ञानी

जूं अधर्म रा कामा धर्म माहे घाल्या,
धर्म रा कामा अधर्म में घाल्या।
दोनूंई विध कर्म बांधे अग्यांनी,
दुरगत माहे वाल्या।।

अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म में डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।

● नई दिल्ली ● वर्ष 21 ● अंक 45 ● 17 - 23 अगस्त, 2020 ● प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 15-08-2020 ● पेज : 9 ● ₹ 10

पर्युषण पर्व का प्रथम दिवस - खाद्य संयम दिवस / स्वतंत्रता दिवस

धर्मोपासना का महत्त्वपूर्ण समय है पर्युषण पर्व : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १५ अगस्त, २०२०

१५ अगस्त का पावन दिन। आज के ही दिन ७३ वर्ष पहले हमारे देश को आजादी मिली थी। आज हमारा देश ७४वीं आजादी वर्षगाँठ मना रहा है। जैन संप्रदाय का आध्यात्मिक पावन पर्व पर्वाधिराज पर्युषण भी आज प्रारंभ हो गया है। कई आम्नाय में यह कल भी शुरू होगा। इस वर्ष पर्युषण पर्व कोरोना की वजह से विशेष ढंग से मनाया जा रहा है। सामुहिक साधना इस बार नहीं हो रही है, पर अपनी-अपनी शक्ति अनुसार अपने घरों में ही आध्यात्मिक साधना हो रही है। हमारे आराध्य, हमारे परमपूज्य गुरुदेव सजगता से श्रावक समाज को आध्यात्मिक संबल प्रदान करवा रहे हैं। जो जहाँ है वहीं आत्माराधना कर रहा है। उपासक श्रेणी को भी इस बार की पर्युषण यात्रा स्थगित रही, पर कोरोना के अवकाश का अच्छा लाभ उठाया है। उपासक श्रेणी द्वारा पूरे देश के उपासक-उपासिकाएँ लगभग छः तो उपवास की और नौ एकासन की बारियाँ नियमित रूप से चल रही हैं। इसे पूरे वर्ष तक चालू रखने का लक्ष्य है।

पर्युषण पर्व के महान अवसर पर तेरापंथ के आध्यात्मिक प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने संवत्सरी पर्व की एकता के लिए नई घोषणा करवाई थी कि श्रमण संघ के आचार्यश्री शिवमुनि जी जिस दिन संवत्सरी पर्व मनाएँगे, तेरापंथ धर्मसंघ भी उसी दिन संवत्सरी मनाएगा। उसी घोषणा के अनुसार तेरापंथ और श्रमण संघ की संवत्सरी इस वर्ष से एक ही दिन होने जा रही है। ऐसा उदारता श्वेतांबर जैन धर्म के सभी आम्नाय दिखाएँ तो संवत्सरी की एकता सामने आ सकती है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी पर्युषण पर्व के नौ दिनों के अलग-अलग दिवस घोषित किए हैं। श्रावक समाज को पर्युषण पर्व के दौरान आध्यात्मिक साधना करने के निर्देश कृपा कराएँ हैं। मीडिया के माध्यम से भी परम पावन एवं चारित्रात्माओं से आध्यात्मिक प्रवचन श्रवण का लाभ मिल सकेगा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है–आज जैन शासन, जैन धर्म श्वेतांबर परंपरा में धर्मोपासना का महत्त्वपूर्ण समय पर्युषण पर्व का प्रारंभ हुआ है। इसके आठ दिन और नौवाँ क्षमापना में धर्माराधना का विशेष समय है। प्रवचन क्रम भी विशेषतया चलता है। इस अवसर्पिणी के जैन शासन के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए हैं, वे चैतन्यपूर्ण आत्मा थे। संसार में अनंत-अनंत आत्माएँ हैं। दुनिया में दो प्रकार की विचारधाराएँ आस्तिकवाद और नास्तिकवाद चलता है। आस्तिकवाद आत्मा और शरीर को अलग-अलग मानता है। आस्तिकवाद में आत्मा का स्वतंत्र अस्तित्व माना गया है। आत्मा की त्रैकालिक सत्ता है। आत्मा अविनाशी है। शरीर विनाशी है।

हम सबकी आत्माएँ अनंत काल पहले थी, है और रहेगी। आत्मा का अस्तित्व है तभी पूर्वजन्म और पुनर्जन्म की बात हो सकती है। आस्तिक दर्शन का सिद्धांत आत्मवाद, पुनर्जन्म वाद और कर्मवाद के सिद्धांत को मानता है। कर्म पुनर्जन्म का कारण है। हम सबकी आत्माओं ने अनंत बार जन्म-मरण किए हैं। जन्म-मरण की परंपरा का नाम संसार है। मोक्ष में जाने के बाद आत्मा अकर्मा हो जाती है, पुनर्जन्म नहीं होता।

(शेष पृष्ठ २ पर)

जो केवलज्ञानी बन जाता है वह आयुष्य पूर्ण कर मोक्ष में जाता है : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १३ अगस्त, २०२०

साधना के श्लाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि ठाणं के सातवें अध्याय में कहा गया है–दो प्रकार के जीव होते हैं। सिद्ध और संसारी। सिद्ध जीव सिद्धि को प्राप्त कर मोक्ष में जा चुके हैं। जो केवलज्ञानी बन जाता है, वह आयुष्य पूर्ण कर मोक्ष में ही जाता है। जब तक केवलज्ञान नहीं होता है, जीव मोक्ष में जा ही नहीं सकता, यह शाश्वत सत्य है। सिद्ध जीव अनंत-अनंत है। जीवों का दूसरों प्रकार है–संसारी। ठाणं में कहा गया है, जो संसार समापन्नक है। जन्म-मरण हो रहा है। जन्म-मरण में परिभ्रमण करने वाले संसार समापन्नक या संसारी जीव होते हैं। वे संसारी जीव सात प्रकार के होते हैं। नैरयिक, तिर्यंचयोनिक, तिर्यंचयोनिकी, मनुष्य, मानुषी, देव और देवी। संक्षेप में जीवों के दो ही प्रकार हैं–त्रस और स्थावर। और भी प्रकार हो सकते हैं जैसे स्त्री-पुरुष, नपुंसक या मिथ्यादृष्टि, सम्यक्दृष्टि, सम्यक्मिथ्या दृष्टि। चार भेद में नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव। पाँच भेद में एकेंद्रिय द्विद्रिंय, त्रिद्रिंय, चतुरिंद्रिय, पंचेंद्रिय। छः भेद में पृथ्वीकाय अपकाय, तेजसकाय, वायुकाय, नवस्पतिकाय और त्रसकाय। पर्याप्त-अपर्याप्त से चौदह भेद भी हो सकते हैं।

ठाणं में संसारी जीवों के सात प्रकार बताए हैं। ये सात प्रकार चार गति और स्त्री-पुरुष, नपुंसक इन सातों के आधार पर सात भेद बताए हैं। पहला भेद है–नैरयिक यानी नरक गति के जो जीव हैं वे नपुंसक ही होते हैं। नरक गति के जीवों में स्त्री-पुरुष का भेद नहीं होता। दूसरा भेद है–तिर्यंचयोनिक।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापथ टाइम्स
17 - 23 अगस्त, 2020

✦ धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

धर्म के बिना जीवन निष्प्राण सा होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ११ अगस्त, २०२०

धर्म-चक्रवर्ती आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा देते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के सातवें अध्याय के ६७वें से ६८वें सूत्र में कहा गया है कि हमारी दुनिया में धर्म नीति भी चलती है और राजनीति भी चलती है। धर्म नीति का बहुत महत्त्व है। धर्म के बिना जीवन भी निष्प्राण सा हो जाता है। जिस आदमी के जीवन में धर्म नहीं है, वह तो एक अपेक्षा से कहा गया है–वह लौहार की धोंकणी के समान है। धोंकणी फूलती है, सिकुड़ती है, पर वह सजीव नहीं है, असली श्वास नहीं ले रही है। धर्म के बिना जिसके दिन आते हैं, चले जाते हैं, वह धोंकणी की तरह श्वास लेते हुए भी सप्राण नहीं हैं।

हमारी दुनिया में धर्म और पाप दोनों चलते हैं। राजनीति भी चलती है। राजनीति से धर्म-नीति का कितना क्या संबंध हो सकता है। राजनीति में भी न्याय-नैतिकता रूपी अहिंसा धर्म एक सीमा तक रहे तो राजनीति भी अच्छी हो सकती है। ठाणं में शास्त्रकार ने बात बताई है कि प्रत्येक चतुरंत चक्रवर्ती राजा के सात एकेंद्रिय रत्न होते हैं। हमारी दुनिया में कुछ उत्तम पुरुष होते हैं। ५४ उत्तम पुरुष होते हैं। एक अवसर्पिणी काल में ये ५४ उत्तम पुरुष होते हैं, वे हैं–२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ६ बलदेव व वासुदेव। इस भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी काल में प्रथम चक्रवर्ती भगवान ऋषभ के पुत्र भरत हुए थे। ६ प्रतिवासुदेव भी जोड़ दें तो त्रिषष्ठी श्लाकापुरुष हो सकते हैं। ५४ में २४ तीर्थंकर तो धर्म नीति के व्यक्ति हैं। बाकी ३० राजनीति के आदमी हो गए। ६ प्रतिवासुदेव भी राजनीति के व्यक्ति होते हैं। धर्मनीति और राजनीति दोनों के पुरुष उत्तम होते हैं।

राजनीति के क्षेत्र में चक्रवर्ती बहुत बड़े आदमी होते हैं। उनके सात एकेंद्रिय रत्न में चक्ररत्न, छत्ररत्न, धर्मरतन, दंडरत्न, असिरत्न, मणिरत्न और काकणीरत्न होते हैं। सात और पंचेंद्रिय रत्न भी होते हैं। वे हैं–सेनापतिरत्न, गृहपतिरत्न, वर्द्धकीरत्न, पुरोहितरत्न, स्त्रीरत्न, अश्वरत्न और हस्तिरत्न। ये चौदह रत्न चक्रवर्ती के होते हैं। सत्ताधीश है, तो संपदा भी चाहिए। ये चक्र आदि सात रत्न ये पृथ्वीकाय के जीवों के शरीर से बने हुए होते हैं। इसलिए इन्हें एकेंद्रिय कहा गया है। रत्न इसलिए कहा गया है कि ये अपनी-अपनी जाति के सर्वोत्कृष्ट होते हैं। इन सात में चक्र, छत्र और दंड और असि इनकी उत्पत्ति की आयुद्धशाला में होती है। चर्म, मणी, और काकाणी की उत्पत्ति चक्रवर्ती के श्रीधर में होती है।

पंचेंद्रिय रत्नों में सेनापति, गृहपति, वर्द्धकि और पुरोहित ये चार पुरुष रत्न हैं। इनकी उत्पत्ति चक्रवर्ती की राजधानी में होती है। अश्व और हस्ती ये तिर्यंच जाति के हैं इनकी उत्पत्ति वैताढयगिरि की उपत्यका में होती है। स्त्रीरत्न की उत्पत्ति उत्तर दिशा की विद्याधर श्रेणी में होती है। ये बड़े सहायक होते हैं। सेनापति दलनायक होता है। गंगा और सिंधु नदी के पार वाले देशों को जीतने में बलिष्ठ भूमिका होती है। गृहपति चक्रवर्ती के गृह की समुचित व्यवस्था में तत्पर रहने वाला होता है। इसका काम है सभी प्रकार के धान्यों, फलों और शाक-सब्जियों का निष्पादन करना। पुरोहित ग्रहों की शांति के लिए उपक्रम करने वाला होता है। हाथी-घोड़ा अत्यंत वेग और महान पराक्रम से युक्त होते हैं। वर्द्धकी गृह-निवेश आदि के निर्माण का कार्य करने वाला होता है। सेतु का निर्माण चक्रवर्ती की सेना को नदी पार कराने के लिए करता है। स्त्री अत्यंत अद्भुत कामजन्य सुख देने वाली होती है।

एकेंद्रिय रत्नों में चक्र सभी आयुधों में श्रेष्ठ तथा दुर्दम शत्रु पर विजय पाने में समर्थ होता है। छत्र चक्रवर्ती के हाथ का स्पर्श पाकर बारह भोजन लंबा-चौड़ा हो जाता है। यह विशिष्ट प्रकार से निर्मित, विविध धातुओं से समलंकृत, विविध चिह्नों से मंडित तथा धूम, हवा औश्र वर्षा से बचाने में समर्थ होता है। चर्म रत्न बारह योजन लंबे-चौड़े छत्र के नीचे की भूमि में प्रातःकाल में बोए गए सब्जी आतद बीजों को मध्याह्न में उपयोग योग बनाने में समर्थ होता है। मणि रत्न–वैडूर्यमय होता है, यह बारह योजन में प्रकाश कर देता है। काकिणी आठ सौवर्णिक प्रमाण का होता है। जहाँ चाँद, सूरज, अग्नि आदि अंधकार को नष्ट करने में समर्थ नहीं होते, वहाँ वह अंधकार को समूल नष्ट कर देता है। इसकी किरणें बारह योजन तक फैलती हैं। इसका प्रकाश रात को भी दिन बना देता है। इसके प्रभाव से चक्रवर्ती द्वितीय अर्ध भरत को जीतने के लिए सारी सेना के साथ तमिस्त्रगुहा में प्रवेश करता है। खड्ग रत्न संग्राम भूमि में इसकी शक्ति अप्रतिहत होती है। इसका वार खाली नहीं जाता। दंड रत्न वज्रमय होता है। यह सभी शत्रुओं की सेनाएँ नष्ट करने में समर्थ होता है। यह विषमता को सम कर देता है। सर्वत्र शांति स्थापित कर देता है। चक्रवर्ती के मनोरथों को पूरा करता है। यह दिव्य और अप्रतिहत होता है। विशेष प्रयत्न से इसका प्रहार करने पर यह हजार योजन नीचे तक जा सकता है।

यह चक्रवर्ती की भौतिक संपदा है। चक्रवर्ती की संपदा की गरिमामय व्याख्या है। चक्रवर्ती बनना भौतिक दृष्टि से तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात होती है। तीर्थंकर बनना धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। कोई-कोई व्यक्ति एक ही जीवनकाल में चक्रवर्ती बन जाते हैं और बाद में तीर्थंकर भी बन जाते हैं। शांतिनाथ भगवान जग में शांति करने वाले एक ही जन्म में चक्रवर्ती और तीर्थंकर बन गए। हम चक्रवर्ती बनें न बनें पर बनने की कामना न करें। अपने कर्मों को काटने वाले खुद को जीतने वाले चक्रवर्ती बन जाएँ तो हमारी विजय हो सकती है।

मुनि दिनेश कुमार जी ने उत्तराध्ययन आगम के २९वें अध्ययन का विवेचन किया।

धर्मोपासना का महत्त्वपूर्ण समय है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आत्मवाद, कर्मवाद और पुनर्जन्म के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा को बताते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि सिद्धि के लिए अनेक जन्मों तक साधना करनी पड़ती है। भगवान महावीर के २७ भवों पर प्रकाश डाला गया है कि किस तरह उनकी आत्मा ने अवरोहण किया, उत्थान भी किया। भगवान महावीर के प्रथम भव नयसार का विस्तार से विश्लेषण किया कि किस प्रकार उनकी आत्मा ने सम्यक् दर्शन ग्रहण किया। सभी मिथ्यात्वी थे। मिथ्यात्व तो हमारा पुराना घर है। वह दिन धन्य है, जब सम्यक् दर्शन मिल जाता है। आलोक मिल जाता है। दुनिया में ऐसे जीव भी हैं, जो हमेशा मिथ्यात्वी थे, हैं और रहेंगे। संसार में भवी जीव भी है, जो मिथ्यात्व से छुटकारा पाकर सम्यक्त्व प्राप्त कर लेते हैं। नयसार अनेक भवों के बाद सम्यक्त्व का आलोक प्राप्त हुआ। साधुओं के संयोग से सम्यक् दर्शन प्राप्त हुआ।

जो तथ्य यथार्थ है, उसे जान लेना, यथार्थ के प्रति श्रद्धा हो जाना सम्यक्त्व का लक्षण है। सम्यक्त्व के बिना क्रिया कर ले तो ज्यादा लाभ नहीं मिलता। जयाचार्य ने आराधना की ढाल में कहा है–जो समकित बिन म्हें चारित्र नी क्रिया रे, बार अनंत करी, पर काज न सरिया रे। सम्यक्त्व युक्त चारित्र की महिमा अलग होती है। नयसार ने सम्यक्त्व प्राप्त किया। जीवनकाल पूर्ण कर प्रथम देवलोक सौधर्म में उत्पन्न हुए। वहाँ का जीवनकाल पूर्ण कर मनुष्य के रूप में पैदा होते हैं, जिसका वर्णन आगे किया जा सकेगा।

पर्युषण पर्व के प्रत्येक दिन के विषय निर्धारित है। आज का प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस है। हमारा शरीर औदारिक शरीर है, उसे आहार चाहिए। जीवन को चलाने के लिए भोजन की आवश्यकता है। तन के लिए भोजन हो पर भोजन के लिए तन न हो। जीवन के लिए भोजन हो। भोजन के लिए जीवन न हो। भोजन साधन रहे, साध्य न बन जाए। आत्मा की दृष्टि से भोजन का बड़ा महत्त्व है। अनशन, ऊनोदरी, रसपरित्याग निर्जरा के प्रकार हैं। पर्युषण में कितने तपस्या करते हैं। एक-एक कदम आगे बढ़ें तो तेला या तेले से बड़ी तपस्या हो सकती है। खाने में ऊनोदरी हो, संयम रखें और कम खाएँ। खाद्य संयम दिवस पर पूज्यप्रवर ने स्वरचित गीत 'भोजन संयम जीवन में उपहार है। खाने में लोलुपता रखना, खुद से खुद की हार है।' का सुमधुर संगान किया। खाद्य संयम यानी खाने में विवेक। कब खाना, क्या खाना ये ध्यान रखें। रात्रि भोजन जमीकंद, मांसाहार का त्याग करें तो अव्रत का अल्पीकरण हो जाता है। भोजन के समय शांति रखें। न गुस्सा न चिंता, मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ प्रशंसा निंदा नहीं करना। इच्छा न हो तो न खाएँ, सहिष्णुता रहे।

आज सहज ही १५ अगस्त स्वतंत्रता दिवस है। स्वतंत्रता आदमी को अच्छी लगती है। स्वतंत्रता के लिए कितना खपना पड़ता है। भारत के पास संपदा है। प्राचीन ग्रंथ है, अनेक पंथ और अनेक संत हैं। इन संपदाओं की सुरक्षा करें और प्राचीन ग्रंथों से ज्ञान, पंथों से प्रेरणा और साधुओं से सन्मार्ग प्राप्त करें। देश में जहाँ भौतिकता के साथ आर्थिक और शैक्षणिक आवश्यक है, वहाँ नैतिकता और आध्यात्मिकता का भी विकास होना चाहिए। आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत नैतिकता का विकास देने वाला आंदोलन है। प्रेक्षाध्यान जैसे आध्यात्मिक उपक्रमों से देश के नागरिकों का विकास हो। संतों से प्रेरणा मिले और आध्यात्मिकता में आगे बढ़ें। नैतिकता-ईमानदारी जीवन है, तो शक्ति रह सकती है। नैतिकता में बल होता है। ईमानदारी कभी पराजित नहीं होती।

आज प्रातः से ही मीडिया द्वारा आध्यात्मिक कार्यक्रम का प्रसारण शुरू हो गया था। मुख्य मुनिप्रवर ने दस लक्षण धर्मों में क्षांति और मुक्ति के बारे में बताया। मुनि कुमार श्रमण जी ने बताया कि आज स्वतंत्रता दिवस है। हम कर्मों से स्वतंत्र बनें और ज्यादा से ज्यादा धर्मोपासना करें। मुनि कीर्तिकुमार जी एवं मुनि मृदुकुमार जी ने तत्त्व-विश्लेषण पर समझाया।

अवसर्पिणी काल में ह्रास का क्रम चलता है : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १० अगस्त, २०२०

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के सातवें अध्याय के ६१वें सूत्र से सूत्र में कहा गया है–बहुत दूर अतीत की बात बताई गई है। जैन दर्शन में कालखंड, एक कालचक्र जिसमें अवसर्पिणी काल और उत्सर्पिणी काल में छः-छः आरे होते हैं। ये कालचक्र अनंत काल में चलता रहता है। वर्तमान का काल अवसर्पिणी का है। इससे ठीक पहले उत्सर्पिणी काल था। इस अवसर्पिणी काल के बाद भी उत्सर्पिणी काल आने वाला है, अवसर्पिणी काल में ह्रास का क्रम चलता है। पहले आदमी का आयुष्य लंबा होता है, बाद में धीरे-धीरे कम होता चला जाता है। अवगाहना पहले लंबी होती है, बाद में छोटी होती जाती है। उत्सर्पिणी में वापस विकास होता चला जाता है।

शास्त्रकार यहाँ बता रहे हैं कि हमारा यह जो जम्बू द्वीप है, उसका यह भरत क्षेत्र है। भरत क्षेत्र में कुलकर व्यवस्था रही है, आगे भी होने वाली है। इस अवसर्पिणी काल से पहले जो उत्सर्पिणी काल या उसमें अतीत में सात कुलकर हुए हैं। उनके नाम हैं–मित्रदामा, सुदामा, सुपार्श्व, स्वयंप्रभ, विमलघोष, सुघोष और महाघोष। वर्तमान में जो अवसर्पिणी काल है और जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सात कुलकर हुए थे। उनमें उनके नाम हैं–विमलवाहन, चक्षुष्मान, यशस्वी, अभिचंद्र प्रसेनजित्, मरुदेव और नाभि। हम भगवान ऋषभ से पहले सुदूर में जाएँ, उस समय यौगलिक युग चलता था। एक माता-पिता के दो संतान होती, एक लड़का, एक लड़की। उस समय न जाति थी, न विवाह प्रथा थी। काल का परिवर्तन हुआ। धीरे-धीरे लोग समूह में रहने लगे। उसका नाम पड़ा कुल। कुल का एक मुखिया होता, वह कुलकर कहलाता। व्यवस्था बनाए रखने के लिए दंड देने का अधिकार भी उस कुलकर को होता। अंतिम कुलकर नाभि हुए।

इन सात कुलकरों की सात भार्याएँ थीं उनके नाम थे–चंद्रयशा, चंद्रकांता, सुरूपा, प्रतिरूपा, चक्षुष्कांता, श्रीकांता और मरुदेवी। जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी आएगा, उसमें भी सात कुलकर होंगे। जिनके नाम होंगे–मित्रवाहन, सुभौम, सुप्रभ, स्वयंप्रभ, दत्त, सूक्ष्म और सुबंधु। वर्तमान अवसर्पिणी काल में प्रथम कुलकर विमलवाहन हुए हैं, उनके सात प्रकार के वृक्ष निरंतर उपभोग में आते थे। उनके नाम हैं–मदांगक, भृंग, चित्रांग, चित्ररस, मयंग, अनग्नक और कल्पवृक्ष। उस समय की दंडनीति की बात शास्त्रकार बता रहे हैं कि जहाँ संघ व्यवस्था होती है, वहाँ नियम भी होते हैं। नियम का अतिक्रमण होने पर दंड व्यवस्था भी होती है। कानून, नियम, मर्यादा बनाना अच्छा हो सकता है, पर मर्यादा का पालन भी करवाया जाए। उस पर भी ध्यान देना अपेक्षित होता है। गलती होने पर दंड की व्यवस्था भी आवश्यक हो जाती है। प्राचीन काल में सात प्रकार का दंड चलता था। कुलकर व्यवस्था जब थी, तब भी दंड नीति चली थी।

पहली दंड नीति है–हाकार। हा! तूने यह क्या किया? ये दंड नीति थी। पहले और दूसरे कुलकर के समय में यह हाकार दंड नीति चलती थी। तीसरे और चौथे कुलकर के समय में छोटे अपराध में हाकार और बड़ा अपराध हो जाता तो माकार–आगे ऐसा मत करना यह दंड दिया जाता है। बाद में पाँचवें, छठे और सातवें कुलकरों के समय में तीसरी दंड नीति धिक्कार शुरू हुई। छोटे अपराध के लिए हाकार, मध्यम अपराध के लिए माकार और बड़े अपराध के लिए धिक्कार दंड नीति प्रचलित थी। धिक्कार यानी धिक्कार है, तुझे, तूने ऐसा किया। इतना कहना बहुत बड़ा दंड हो जाता। बाद में चार दंडनीतियाँ और चलीं।

चौथी दंडनीति, परिभाषा–थोड़े समय के लिए नजर बंद करना, क्रोधपूर्ण शब्दों में यहीं बैठ जाओ का आदेश देना। पाँचवीं दंड नीति, मंडलबंध-नियमित क्षेत्र से बाहर न जाने का आदेश दे देना। छठी दंड नीति–चारक, कैद में डालना और सातवीं दंड नीति–छविच्छेद–हाथ-पैर आदि काटना। एक मान्यता है ये चार दंड नीतियाँ चक्रवर्ती भरत के समय में प्रचलित हुई। एक अभिमत यह भी है कि इन चार में से प्रथम दो परिभाषा और मंडलबंध ऋषभ ने शुरू कर दी। अंतिम दो चक्रवर्ती भरत के समय माणवकनिधि से उत्पन्न हुई। ये चारों भरत के शासनकाल में प्रचलित रही। यह भी माना गया है कि ऋषभ के राज्य में बंध बेड़ी का प्रयोग और घात-डंडे का प्रयोग प्रवृत्त हुए। भरत के शासन में मृत्युदंड भी चला।

हमारी साधु संस्था में भी नियम है। आचारचूला में साधु की आचार व्यवस्था की बात है। निशीदछेद में भी कौन सी गलती होने पर क्या प्रायश्चित दिया जाए उसके भी संकेत मिलते हैं। साधु संस्था में भी दंडनीति, प्रायश्चित की व्यवस्था है। गृहस्थों में तो ये व्यवस्था आवश्यक है। विधान-संविधान बनता है, ये-ये नियम हैं, इनका उल्लंघन होगा तो ये दंड होगा। लोकतंत्र में न्यायपालिका होती है। वहाँ भी दंड की व्यवस्था है। निर्दोष को सजा न दी जाए। कोई भी तंत्र हो, अनुशासन तो रहना चाहिए। कानून व्यवस्था भी ठीक रहे। बढ़िया बात है, दंड आए ही नहीं। उचित रूप में गलती का प्रतिकार करना भी अपेक्षित हो सकता है।

मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम संसार में रहते हुए भी निर्लिप्त रहें, आसक्त न बनें।

ज्ञानशाला धार्मिक ज्ञान का उपक्रम है : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, ६ अगस्त, २०२०

जन-जन के उद्धारक, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि ठाणं आगम के सातवें स्थान के ५०वें से सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि हमारे इस लोकाकाश में हमारी सृष्टि है। ये जो लोकाकाश है ये अनंत आकाश में छोटा सा है। बाकी सारा ही अलोकाकाश ही है। इस लोक को या उसके हिस्से को हम सृष्टि कह सकते हैं। क्योंकि ये परिवर्तन जो हो रहा है, इस सृष्टि में हो रहा है। अलोक में तो जैसा है, वैसा पड़ा है। लोक अपने आपमें बहुत विशाल है। इस लोक की जो दुनिया है, उसमें एक क्षेत्र है–अढाई द्वीप। ये अढ़ाई द्वीप मनुष्य क्षेत्र है। समयक् क्षेत्र है। मनुष्य इस अढ़ाई क्षेत्र द्वीप में पैदा होते हैं और कहीं नहीं।

अढ़ाई द्वीप के बारे में शास्त्रकार ने ठाणं में कुछ वर्णन किया है। अढ़ाई द्वीप में मध्यमवर्ती द्वीप है, जो गोलाकार है, वह है जम्बूद्वीप। जम्बूद्वीप में हम लोग रह रहे हैं। इस जम्बूद्वीप में सात वर्ष (क्षेत्र) है। वे हैं–भरत, ऐरवत, हैमवत, हैरण्यवत, हरिवर्ष, रम्यक्वर्ष और महाविदेह। हम लोग जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में स्थित है। भरत क्षेत्र तो वर्तमान में कोई तीर्थंकर नहीं है। महाविदेह में आज भी तीर्थंकर विद्यमान है। हर महाविदेह में हमेशा तीर्थंकर होते ही होते हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

जो केवलज्ञानी बन जाता है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एकेंद्रिय से लेकर तिर्यंच पंचेंद्रिय के जीव। तिर्यंच तीनों प्रकार के होते हैं। स्त्री-पुरुष और नपुंसक। यहाँ तिर्यंच गति के दो प्रकार किए गए हैं। पुरुष जाति और स्त्री जाति पंचेंद्रिय में ही होती है चाहे देव हो, मनुष्य हो या तिर्यंच। नपुंसक पंचेंद्रिय से लेकर एकेंद्रिय तक हो सकते हैं। तीसरा भेद है तिर्यंच योनिकी में केवल स्त्री तिर्यंच आते हैं। चौथा भेद है–मनुष्य। मनुष्य में स्त्री भी होती है, पुरुष और नपुंसक भी मनुष्य होते हैं। पर चौथे भेद में पुरुष और नपुंसक दोनों समाहित हैं। मनुष्य के दो प्रकार और भी हैं–संज्ञी और असंज्ञी या समनस्क और अमनस्क। असंज्ञी प्राणी नसुंपक ही होता है। असंज्ञी मनुष्य बहुत सूक्ष्म होते हैं, पर होते हैं पंचेंद्रिय ही। संज्ञी मनुष्य में स्त्री-पुरुष, नपुंसक तीनों होते हैं।

पाँचवाँ प्रकार मानुषी। स्त्री मनुष्य। स्त्री चाहे मनुष्य, तिर्यंच या देवगति में हो संज्ञी ही होती है। पुरुष भी सारे (मनुष्य, तिर्यंच और देवगति वाले) मन वाले होते हैं। केवलज्ञानी किसी वेद में नहीं होते हैं, अवेदी होते हैं। असंज्ञी नपुंसक हो सकता है। छठा प्रकार है–देव। देवगति में जो पुरुष है, वे नपुंसक नहीं होते। देव गति में पुरुष या स्त्री ही होते हैं, नपुंसक नहीं। सारे के सारे देव चाहे पुरुष हो या स्त्री वे संज्ञी ही होते हैं। चार गति में सिर्फ देव गति में नपुंसक नहीं होते हैं। सातवाँ प्रकार है–देवी देवी है, वो ऊपर के देवलोकों में नहीं होती। देवी पहले, दूसरे देवलोक तक ही होती है। बाकी देवलोकों में देव ही होते हैं। ये सातों प्रकार शरीर के आधार पर बताए गए हैं।

नरक और देव, देवी इन तीनों के वैक्रिय शरीर ही होता है। औपरिक शरीर नहीं होता है। तिर्यंचयोनिक, तिर्यंचयोनिकी, मनुष्य और मानुषी ये जो चार हैं, इनके मूलतः औदारिक शरीर होता है। यो लब्धि से वैक्रिय और आहारक शरीर हो सकता है। तेजस और कार्मण शरीर सभी संसारी जीवों के होता ही है। शरीर आत्मा। आत्मा मूल शरीर संसारी है। जो आत्मा शरीर के साथ है, वो संसारी है। पूर्णतया शरीर से युक्त आत्मा अशरीरी, सिद्ध होती है। जब तक संसारी है, शरीर साथ में रहेगा ही रहेगा। एक गति से दूसरी गति के अंतराल में तेजस और कार्मण शरीर होता है। संसारी आत्मा सशरीरी होती है।

शरीर और आत्मा दो चीजें हैं। हमें आत्मा दिखाई नहीं देती है वह अमूर्त, अरूपी है। उसके कोई रंग-रूप नहीं हैं। आँखों से दिखाई नहीं देती। सारे शरीर मूर्त हैं। रूपी हैं।

ज्ञानशाला धार्मिक ज्ञान...

(पृष्ठ ३ का शेष)

जम्बूद्वीप में सात वर्षधर पर्वत हैं वे हैं–क्षुद्रहिमवान्, महाहियवान, निषध, नीलवान, रुक्मी, शिखरी और मंदर। जम्बूद्वीप में सात महानदियाँ पूर्वाभिमुख होती हुई लवण समुद्र में समाप्त होती है। वे हैं–गंगा, रोहिता, हरित, शीता, नरकांता, सुवर्णकूला और रक्ता। सात महानदियाँ जम्बूद्वीप के पश्चिमाभिमुख होती हुई लवण समुद्र में समर्पित होती हैं। वे हैं–सिंधू, रोहितांशा, हरिकांता, शीतोदा, नारीकांता, रुप्यकूला और रक्तवती। ये जम्बूद्वीप का संक्षिप्त वर्णन ठाणं में दिया गया है। जम्बूद्वीप के आगे तो लवण-समुद्र है, इसलिए इसे द्वीप कहा गया है।

दूसरा द्वीप है–घातकीखंड। घातकीखंड में दो-दो क्षेत्र हैं। घातकीखंड के दो हिस्से पूर्वार्द्ध और पश्चिमार्ध है। पूर्वार्द्ध में सात क्षेत्र हैं–भरत, ऐरवत, हैमवत, हैरण्यवत, हरिवर्ष, रम्यक्वर्ष और महाविदेह। इसी तरह सात वर्षधर पर्वत, सात पूर्वाभिमुख महानदियाँ व सात पश्चिमाभिमुख महानदियाँ हैं, जिनके नाम जम्बूद्वीप वाले ही हैं। सात पूर्वाभिमुख नदियाँ कालोद समुद्र में और पश्चिमाभिमुख नदियाँ लवण समुद्र में समर्पित हो जाती हैं। धातकीखंड के पश्चिमार्ध में भी सात क्षेत्र, सात वर्षधर पर्वत और सात-सात महानदियाँ हैं। अंतर केवल इतना है कि पूर्वाभिमुखी नदियाँ लवण समुद्र में व पश्चिमाभिमुखी नदियाँ कालोद समुद्र में समर्पित हो जाती है।

पुष्कर द्वीप का आधा हिस्सा ही मनुष्य क्षेत्र है, इसलिए इसे अर्धपुष्करवर द्वीप कहते हैं। इसके भी दो हिस्से हैं–पूर्वार्द्ध और पश्चिमार्ध। पूर्वार्द्ध में भी वही सात वर्ष, सात वर्षधर पर्वत, पूर्वाभिमुख सात महानदियाँ (जो पुष्करोद समुद्र में समाप्त होती है) और पश्चिमाभिमुख सात महानदियाँ (जो कालोद समुद्र में समाप्त होती है) है। नाम सभी के पहले वाले ही हैं। इसी तरह पश्चिमार्ध में ये सब है, अंतर सिर्फ इतना है कि इसकी पूर्वाभिमुख महानदियाँ कालोद समुद्र में और पश्चिमाभिमुख महानदियाँ पुष्करोद समुद्र में समर्पित हो जाती है।

यह अढ़ाई द्वीप का संक्षिप्त वर्णन ठाणं के सातवें स्थान में दिया गया है। ये जैन भूगोल के अनुसार है। इस अढ़ाई द्वीप में ही मनुष्य, साधु, तीर्थंकर और केवलज्ञानी आत्माएँ हैं। अध्यात्म की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूमि अढ़ाई द्वीप है, जहाँ साधना हो सकती है। हमें साधना का मौका यही मिल सकता है। हम अध्यात्म की साधना, ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करें। चतुर्मास का समय है, स्थितियाँ जैसी भी हैं, उससे जो फायदा उठाया जा सके, वो उठाने का प्रयास करना चाहिए। समता रखें और लाभ उठाएँ।

बाल पीढ़ी के संदर्भ में पुज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी का परिपूर्ण आयुष्य होता है। सौ वर्ष के अनुमानित आयुष्य में बालावस्था आती है। वृद्धावस्था, युवावस्था तो पता नहीं आए या न आए। साधु संस्था में १६ वर्ष तक की बालावस्था है। बालक और पालक का संबंध है। पालक का कर्तव्य है कि बालक अच्छा बने, विकास करे। ज्ञान और संस्कार में विकास करें। बालावस्था में महज पथ का यात्री साधु बन जाना बड़ी बात है। महापथ के पथिक वीर लोग बन सकते हैं। जो ज्ञानशालाएँ चल रही हैं, उनमें ज्ञानार्थियों की संख्या में यथासंभव वृद्धि हो। जिन क्षेत्रों में ज्ञानशालाएँ नहीं चल रही है, वहाँ संभावना हो तो ज्ञानशालाएँ खुलें। इस तरफ महासभा व स्थानीय सभाएँ ध्यान दें। भाद्रव महीने का प्रथम रविवार ज्ञानशाला दिवस के रूप में स्थापित है। बच्चे खुद ज्ञानशाला, ज्ञान का आलय बन जाएँ। ज्ञानशाला धार्मिक ज्ञान का उपक्रम है।

स्कूली ज्ञान भी ज्ञान है, वह एक शिक्षा-नीति है। ये ज्ञान भी आवश्यक है। मैं इसे लौकिक विद्या कहता हूँ। दूसरी है, लौकोत्तर-आध्यात्मिक विद्या वो ज्ञानशाला में, साधु-साध्वियों एवं समण श्रेणी के पास से मिल सकती है। कितनी प्रशिक्षिकाएँ एवं पुरुष ज्ञानशाला में सेवा देते हैं। यात्रा में स्वागत के समय भी ज्ञानशाला का उपक्रम होता है। प्रस्तुतियाँ होती हैं। बच्चों पर ध्यान दिया जाता है। ज्ञानशाला तेरापंथ धर्मसंघ का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। संस्था शिरोमणी का अभिभावकत्व प्राप्त है। जीवन में प्रसन्नता एक महत्त्वपूर्ण बात है। चाहे हमारे बालक (साधु) हो या समाज के बालक उनका चित्त प्रसन्न रहे। उदासीनता न हो। प्रसन्नता, प्रफुल्लता उनके विकास में और सहयोगी बन सकती है। विकास का अवकाश रह सकता है। बाल मुनि व साध्वियों में ज्ञान का विकास होता रहे। अच्छे संस्कारों का विकास होता रहे। बीज को अच्छा किसान, अच्छी भूमि मिल जाए तो वह वटवृक्ष बन सकता है। बीजों की सुरक्षा होनी चाहिए। यह एक दृष्टांत से समझाया।

मुनि दिनेश कुमार जी ने नौ तत्त्वों को समझाया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई सार्वीगण	(75 लाख रुपये)
अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(31 लाख रुपये)
श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्सामपुर	(11 लाख रुपये)
श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(5 लाख रुपये)

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

उत्तर हावड़ा।

पवन कुमार डागा के पौत्र एवं नवीन-संगीता डागा (सरदारशहर निवासी, चेतला कोलकाता प्रवासी) की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से अमरचंद दुगड़ के निवास स्थान पर संस्कारक महेंद्र दुगड़, प्रवीण कुमार सिंघी और रवि छाजेड़ ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। महेंद्र दुगड़ और रवि छाजेड़ ने मंगलभावना पत्रक के बारे में उपस्थितजनों को जानकारी दी।

परिवार की तरफ से अमरचंद दुगड़ ने उपस्थित सभी का स्वागत और संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप की तरफ से परिवारजनों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। संस्कारकों ने पारिवारिकजनों को धारणा अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। तेयुप उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा, मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी, संगठन मंत्री और जेटीएन प्रतिनिधि जितेंद्र सिंघी एवं तेकिमं के सदस्य जय दुगड़ उपस्थित थे।

जयपुर।

कनक-दुर्गाप्रसाद बाफना के सुपौत्र एवं दिलखुश-श्रेयांस बाफना के सुपुत्र का जैन संस्कार विधि से नामकरण संस्कार उनके आवास पर संपन्न करपया गया। परिषद के पूर्व अध्यक्ष एवं ही संस्कारक सुरेंद्र सेठिया ने मंगलमय वातावरण में मंत्रोच्चार का उच्चारण करते हुए जैन संस्कार विधि से यह कार्य संपन्न करवाया।

तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष श्रेयांस बैंगाणी एवं संयोजक सुनील बोथरा सहित अन्य पारिवारिकजनों ने सोशल डिस्टेंस की पालना करते हुए कार्यक्रम में सम्मालित हुए।

अहमदाबाद।

लक्ष्मीपत गोलछा की सुपौत्री एवं जिगर गोलछा की सुपुत्री का जैन संस्कार विधि से नामकरण संस्कार किया गया। संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं सह-संस्कारक जागृत दुगड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ नामकरण विधि को संपादित किया।

तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी ने ऑन लाइन वीडियो कॉल के माध्यम से गोलछा परिवार के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप दिया। पूर्वाध्यक्ष नोरतनमल रामपुरिया ने गोलछा परिवार की ओर से परिषद के प्रति आभार ज्ञापित किया। संयोजक जागृत दुगड़ ने परिषद की ओर से आभार व्यक्त किया।

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ हावड़ा।

लाडनूं निवासी, भागलपुर प्रवासी बिनोद कोठारी की सुपुत्री स्नेहा कोठारी का शुभ विवाह हनुमानगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी आतमचंद नौलखा के सुपुत्र राजेश कुमार का तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। जैन संस्कार विधि के अभातेयुप राज्यप्रभारी प्रवीण सिंघी और संस्कारक पवन बैंगाणी ने मांगलिक कार्यक्रम को पूरे विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के संगान के साथ संपन्न कराया। दोनों परिवारों को परिषद द्वारा वैवाहिक प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

महिला मंडल के विविध कार्यक्रम

'तेरापंथी की पहचान' कार्यक्रम

अमराईवाढ़ी-ओढ़व।

तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा जूम एप पर विशेष तेरापंथी की पहचान का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। विजय गीत का संगान उपाध्यक्ष दिनेश टुकलिया ने किया। सभा के अध्यक्ष रमेश पगारिया ने अपना वक्तव्य दिया। महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने अपना वक्तव्य देते हुए गीतिका प्रस्तुत की। तेयुप के अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सतीश चोरड़िया ने तेरापंथ की पहचान क्या होनी चाहिए उसके बारे में जानकारी दी। समस्त समाज ने इस कार्यक्रम की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मंत्री हेमंत पगारिया ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के उपाध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने किया।

भक्तिमय संगीत संध्या का आयोजन

भीलवाड़ा।

सुमधुर गायक संदीप बरड़िया बैंगलुरू द्वारा गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी को मेवाड़ धरा पर पधारने का आह्वान भक्तिमय संगीत संध्या द्वारा किया गया। २०२१ गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी का शुभागमन मेवाड़ (भीलवाड़ा) में होगा। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आमंत्रण भक्तिमय संगीत संध्या द्वारा प्रेषित किया। संगीत के स्वरों की गूँज गुरुदेव तक पहुँचे और वो भी इस भक्ति से विभोर होकर जल्दी से जल्दी पधारे। इस संगीत संध्या का प्रसारण फेसबुक पर लाइव किया गया।

इस लाइव प्रसारण से भीलवाड़ा महिला मंडल अध्यक्षा विमला रांका की टीम और पूरे देश के तेरापंथ समाज का जुड़ाव रहा। सभी ने इस संगीत संध्या को ॐ अर्हम् की ध्वनि से सराहा और अनेक कमेंट्स द्वारा अपनी भावना व्यक्त की।

गोष्ठी का आयोजन

भीलवाड़ा।

तेमम द्वारा १२ भावनाओं पर गोष्ठी का आयोजन जूमन एप पर किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। प्रेरणा गीत का संगान उपाध्यक्ष मैना कांठेड़ ने किया। मंडल अध्यक्ष विमला रांका ने सभी का स्वागत करते हुए बारह भावनाओं के महत्त्व को समझाया। निर्जरा भावना, लोक भावना, बोधि दुर्लभ भावना, धर्म भावना पर क्रमशः सुमन लोढ़ा एवं समता चौधरी, उपासिका चंद्रकांता चोरड़िया, प्रवक्ता उपासिका पारस देवी मेहता, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंद बाला टोडरवाल ने कहानी के माध्यम से इन सभी भावनाओं पर अपने भावों की प्रस्तुति दी।

मैत्री की अनुप्रेक्षा मंत्री रेणु चोरड़िया ने करवाई साथ ही कार्यक्रम का संचालन किया। इस गोष्ठी में लगभग २० बहनों ने भाग लिया।

'कार्यकर्ता की अर्हताएँ' कार्यशाला

चेन्नई।

तेमम के तत्त्वावधान में वेबिनार का आयोजन जूम एवं तेरापंथ महिला मंडल फेसबुक पेज पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कंचन भंडारी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया। महिला मंडल की अध्यक्षा शांति दुधोड़िया ने वेबिनार में उपस्थित सभी का स्वागत किया।

उपाध्यक्ष पुष्पा हिरण ने मुख्य वक्ता कुमुद कच्छारा का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता अभातेमम की पूर्व अध्यक्षा कुमुद कच्छारा का वक्तव्य बहुत प्रभावशाली रहा। अंत में विषय से संबंधित कुछ प्रश्न भी अध्यक्ष शांति दुधोड़िया ने रखे, जिनका सटीक समाधान कुमुद कच्छारा ने सरल शब्दों में बहनों को समझाया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यकर्ता बहनों का भी पूर्ण सहयोग रहा। संचालन शांति दूधोड़िया ने किया एवं आभार ज्ञापन मंत्री गुणवंती खाटेड़ ने किया।

डिजिटल धम्म जागरण का आयोजन

चेन्नई।

तेमम के तत्त्वावधान में डिजिटल धम्म जागरण का आयोजन किया गया। संघ गायक कमल सेठिया ने अपने भावों से सुंदर गीतिका की प्रस्तुति दी। अध्यक्षा शांति दुधोड़िया ने समागत सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। अभातेमम की राष्ट्रीय अध्यक्षा पुष्पा बैद ने अपने अध्यक्षीय स्वर प्रस्तुत किया। मंत्री तरुण बोहरा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। अभातेमम की राष्ट्रीय अध्यक्षा पुष्पा बैद, महामंत्री तरुण बोहरा और चेन्नई से जुड़े अभातेमम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला और अनीता चोपड़ा को चेन्नई तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विमल चीप्पड़ ने कार्यक्रम के शुभारंभ में सभी संस्था की ओर से शुभकामना संप्रेषित की।

कार्यक्रम में डिजिटल सहयोग रमेश खटेड़ का भरपूर मिला और अमर रहेगा धर्म हमारा फेसबुक पेज के एडमिन मनोज बैद का भी कार्यक्रम को जन-जन तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। कमल सेठिया ने तेरापंथ के गीतिकाओं के साथ आचार्यों पर अनेकानेक गीतिका के माध्यम से वातावरण को संगीतमय बना दिया। कार्यक्रम लगभग ३ घंटे तक चला। कार्यक्रम का संचालन शांति दूधोड़िया ने एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री गुणवंती खटेड़ ने किया।

साधारण सभा के आयोजन

राउरकेला।

जूम एप के द्वारा साधारण सभा रखी गई। जिसमें काफी बहनों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से की गई। अध्यक्षा पुनिता बोथरा ने सबका स्वागत किया और अपना वक्तव्य दिया। तत्पश्चात नीतू कोठारी ने संविधान वाचन किया। कोषाध्यक्ष तरुलता बैद ने साल भर का आय-व्यय का ब्योरा दिया। इसके बाद सचिव सुगीता दुगड़ ने मंत्री प्रतिवेदन पढ़ा जिसमें साल भर में महिला मंडल के द्वारा संपादित हुए सभी कार्यक्रमों की जानकारी दी। 'बढ़ें आरोहण की ओर : सशक्त बनें चहुओर' कार्यशाला ज्योति भंसाली ने कराई। आभार ज्ञापन पुनिता ने किया।

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा साधारण सभा जिओ मीट एप के द्वारा आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से उपासिका मंजू देवी गेलड़ा ने की। सहमंत्री सेजल मांडोत ने प्रेरणा गीत का संगान किया। मंडल की अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने ऑन लाइन मीटिंग में उपस्थित सभी बहनों का स्वागत किया।

आरोहण का संदेश, संस्था बने विशेष के अंतर्गत उपासिका मंजूदेवी गेलड़ा ने संविधान का वाचन किया। अध्यक्ष और मंत्री को सफलतम कार्यकाल की बधाई दी। मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बहनों का एवं अखिल भारतीय स्तर पर विजेता बहनों का नाम उल्लेख करते हुए सभी को बधाई दी। कोषाध्यक्ष सुनीता चोरड़िया ने वर्षभर का आय-व्यय प्रस्तुत किया।

'बढ़ें आरोहण की ओर, सशक्त बनें चहुओर' के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वस्थता और परिवार समाज एवं राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य विषय पर उपाध्यक्ष नीरू सिंघवी तथा सहमंत्री वंदना पगारिया ने विचार व्यक्त किए।

'आरोहण का सजग प्रयास, ज्ञान का हो विकास' के अंतर्गत मंजू देवी गेलड़ा ने तथा अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने सभी बहनों को तप, जप एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। भावना चोका में भी आर्थिक सहयोग देने हेतु सभी को प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया तथा आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष शशि ओस्तवाल ने किया।

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम ने साधारण सभा 'आरोहण' जूम मीटिंग में आयोजित की गई। मंत्री रानी बाफना ने बताया कि साधारण सभा की शुरुआत साध्वी प्रमोदश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की। कार्यक्रम को तीन चरणों में प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल के सदस्यों ने मंगलाचरण प्रेरणा गीत से किया।

अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल के सभी सदस्य, कार्यसमिति के सदस्याओं, तेरापंथ सभा, युवक परिषद, कन्या मंडल, किशोर मंडल द्वारा दिए गए विशेष सहयोग का आभार व्यक्त किया। खुशल ढेलड़िया और कन्या मंडल संयोजिका विधि भंसाली का सम्मान किया गया।

रानी बाफना ने महिला मंडल के साल भर की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष निर्मला संकलेचा ने वर्ष भर के आय-व्यय का ब्योरा सबके समक्ष प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष उर्मिला सालेचा ने संविधान का वाचन किया।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

✦ तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ के विविध कार्यक्रम

संबोध कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित पुस्तक 'भिक्षु विचार दर्शन' पर संबोध कार्यशाला का आयोजन ऑन लाइन जूम वेबिनार द्वारा किया गया। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कोटेचा ने सभी का स्वागत किया। आध्यात्मिक उपक्रम के संयोजक निर्मल संचेती ने कार्यशाला के आयोजन के लिए टीपीएफ दिल्ली को साधुवाद दिया। टीपीएफ के अध्यक्ष श्रील लुंकड़ ने सभी को कार्यक्रम से जुड़ने का आह्वान किया।

कार्यक्रम की मुख्य संयोजिका जया राखेचा ने अलका सांखला से सबका परिचय करवाया एवं अलका ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के साहित्य के बारे में जानकारी दी। मुख्य वक्ता शिल्पा बैद ने आचार्य भिक्षु के जीवन के बारे में बताया। भजनों के प्रयोग से कार्यक्रम में चार चाँद लग गए। देश-विदेश से ३५० लोग कार्यक्रम से जुड़े फेसबुक पर कार्यक्रम लाइव आया।

टीपीएफ के राष्ट्रीय महामंत्री सुशील चोरड़िया ने सभी श्रावक-श्राविकाओं को धन्यवाद दिया। हम सभी साथ मिलकर इसी तरह आध्यात्मिक प्रगति करते रहें। इसी भावना के साथ कार्यक्रम की सूत्रधार डॉ० आरती बोथरा कोचर ने अगले रविवार संबोध कार्यशाला में फिर से पधारने का आमंत्रण दिया।

प्रतियोगिता का आयोजन

उत्तर कर्नाटक।

साध्वी काव्यलता जी की प्रेरणा से उत्तर कर्नाटक स्तरीय टीपीएफ उत्तर कर्नाटक शाखा में ज्ञान चेतना जगाएँ नया आलोक पाएँ ऑन लाइन प्रतियोगिता का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने कहा कि जीव-अजीव पुस्तक पर आधारित प्रत्येक बोल के प्रश्नों से उत्तर खोजने की भावना का जागरण हुआ। अध्यक्ष अनिल नाहर एवं मंत्री मनजीत जैन तथा संयोजिका मीना नाहर के श्रम से प्रतियोगिता गतिशील है। साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी का सहयोग प्रतियोगिता को नया रूप प्रदान करता है। साध्वी काव्यलता जी ने शुभकामनाएँ संप्रेषित की। अनिल नाहर ने तत्त्वज्ञान की इस प्रतियोगिता में उत्साह दिखाया। प्रश्नपत्र बनाने में साध्वी ज्योतियशा जी का समय नियोजित बड़ी ही उपयोगी है।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कोटेचा रिकॉर्डेड वीडियों के माध्यम से प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को अपनी शुभकामना प्रेषित की और कहा कि हमारे आध्यात्मिक ज्ञान तत्त्वज्ञान का मुख्य आधार है। २५ बोल-२५ बोल की सटीक जानकारी एवं व्याख्या परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित पुस्तक जीव-अजीव से हमें मिलती है इसी पुस्तक के आधार पर टीपीएफ द्वारा ऑन लाइन प्रतियोगिता का आयोजन करवाने पर साध्वीश्री जी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

दक्षिण भारत के टीपीएफ के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन सुराणा ने महाश्रमण वाटिका से वीडियो के माध्यम से टीपीएफ उत्तर कर्नाटक ब्रांच द्वारा ऑन लाइन प्रतियोगिता में भाग लेने पर सबको बधाई प्रेषित की। कर्नाटक एरिया समिति के महामंत्री सुरेश कोठारी ने भी रिकार्डेड वीडियों के माध्यम से प्रतियोगिता में भाग लेने पर सबको अपनी शुभकामनाएँ दी।

टीपीएफ उत्तर कर्नाटक के संस्थापक अध्यक्ष अनिल नाहर ने उत्तर कर्नाटक टीपीएफ की तरफ से सबको शुभकामनाएँ प्रेषित की और कहा कि आप सभी की सहभागिता ही प्रतियोगिता का सफलता का सूत्र है। कार्यकारिणी सदस्य मीना नाहर ने कार्यक्रम का संयोजन किया। प्रतियोगिता में अब तक ३ राउंड हो चुके हैं। लगभग ३५० श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

✦ व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

– आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथी सभा के शपथ ग्रहण समारोह के विविध आयोजन

पश्चिम विहार, दिल्ली

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, पश्चिम विहार के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्यामलाल जैन एवं उनकी नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण जूम एप पर हुआ। नवकार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पूर्व मंत्री हेमंत बैद ने सभा गीत का संगान किया। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अध्यक्ष श्यामलाल जैन को शपथ महासभा के उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने दिलाई।

सभी पदाधिकारियों को शपथ महासभा दिल्ली प्रभारी के०के० जैन ने और कार्यकारिणी प्रभारियों को शपथ सभा के प्रभारी नत्थूराम जैन ने दिलाई। महासभा के न्यासी जसराज मालू, दिल्ली सभा अध्यक्ष तेजकरण सुराणा, महासभा से सुभाष सेठिया एवं कैलाश डूंगरवाल, अणुव्रत महासमिति के कोषाध्यक्ष जयप्रकाश जैन ने मंगल आशीर्वाद के साथ शुभकामना दी। क्षेत्र के वरिष्ठ श्रावक एवं सभा के मुख्य संरक्षक किशनलाल नाहटा एवं कल्याण मित्र डालमचंद बैद ने भी अपनी भावना व्यक्त की तथा शुभकामनाएँ प्रेषित की।

आभार ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष गजेंद्र दूधोड़िया ने किया। कार्यक्रम का संयोजन सभा के नवनिर्वाचित मंत्री मीष बरमेचा ने किया। कार्यक्रम सामुहिक मंगलपाठ से संपन्न हुआ।

आसींद

तेरापंथी सभा एवं तेयुप की नव निर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह शासनश्री साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में एवं मेवाड़ कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत के मुख्य आतिथ्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। तेरापंथ सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष तेजमल रांका ने सभी का आभार प्रकट किया। तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष लकी बाफना ने सभी के सहयोग से परिषद को नई ऊँचाईयों की ओर ले जाने का आह्वान किया। तेरापंथी सभा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने एवं तेयुप की कार्यकारिणी को पूर्व सभाध्यक्ष सुरेश रांका ने शपथ दिलाई।

साध्वीश्री जी ने सभी को संगठित होकर काम करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्षा सुनीता गोखरू, शिक्षा समिति अध्यक्ष कन्हैयालाल कांठेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राकेश बड़ोला, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका अस्मिता गोखरू एवं कन्या मंडल संयोजिका सलोनी बाफना आदि उपस्थित थे।

साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र एवं कन्या मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से समारोह का आगाज हुआ। साध्वी परिवार द्वारा गीतिका सुरेश रांका द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। आभार ज्ञापन मेवाड़ कॉन्फ्रेंस सहमंत्री अनिल गोखरू ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मदनलाल गोखरू ने किया।

रिसड़ा

तेरापंथी सभा के नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन तेरापंथ सभा में एवं जूम एप के माध्यम से संयुक्त रूप से किया गया। सिरड़ा सभा के वरिष्ठ सदस्य अजित जैन ने रिसड़ा सभा के नवमनोनीत अध्यक्ष ललित छाजेड़, मंत्री मनोज गुलगुलिया के साथ-साथ सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी की टीम को शपथ दिलाई।

शपथ ग्रहण के पश्चात अध्यक्ष ललित छाजेड़ एवं मंत्री मनोज गुलगुलिया ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए सभी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

महिला मंडल : साधारण सभा... बालोतरा

(पृष्ठ ५ का शेष)

सहमंत्री रेखा श्रीश्रीमाल ने जो भी प्रतियोगिताएँ हुई उनको बताया और केंद्र में जिन बहनों का रैंक लगा उनका नाम लेकर सम्मान किया गया। मनीषा ओस्तवाल, कविता सालेचा, मंजू ढेलड़िया का केंद्र में ऑन लाइन प्रतियोगिता में रैंक लगने पर सम्मान किया गया।

साध्वीश्री जी ने दूसरे चरण के अंतर्गत 'बढे आरोहण की ओर - सशक्त बनें चहुओर' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। तीसरा चरण 'आरोहण का सजग प्रयास ज्ञान का हो विकास' मंत्री रानी बाफना ने सभी सदस्यों को कोविड-१९ के समय अभातेममं के द्वारा करवाई गई ऑन लाइन प्रतियोगिता में ज्यादा-से-ज्यादा भाग लेकर अपना रैंक बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री संगीता बोथरा ने किया। आभार ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा ने किया।

पर्युषण पर्व पर विशेष

क्रोध घातक वायरस है

❑ समणी विपुलप्रज्ञा ❑

पर्युषण पर्व जैनों का महान पर्व है। यह आत्मशुद्धि का पर्व है। कई भौतिक पर्व अपनी व्यापक लोकप्रियता के कारण सभी जातियों, धर्मों के द्वारा मनाए जाते हैं। पर पर्युषण पर्व एक मात्र जैन समाज में मनाया जाता है। इस पर्व के आगमन से पहले ही धार्मिक चेतना में नवस्पंदन व स्फूर्ति का संचार होता है। कई भव्य आत्माएँ अठाई, मासखमण, एकांतर इत्यादि तपस्या करके अपनी आत्मा को पाप कर्मों से मुक्त करती है। सचमुच पर्युषण पर्व मानव मात्र को नई दिशा व नया बोध प्रदान करता है। अब लक्ष्य बनाए, हम आठ दिन क्रोध उपशम की विशेष साधना करें। पर्युषण का संदेश है साधक अपनी आत्मा के पास रहें। इस पर्व पर प्रत्येक जैन बंधु के भीतर नव उल्लास देखने को मिलता है। वर्तमान में पूरा विश्व कोरोना वायरस से अत्यंत पीड़ित है। सरकार ने चेतावनी दी, Lock Down भी किया ताकि इंसान अपने-अपने घर में रहे, स्वयं को कोरोना से बचाए। पर्युषण भी हमें यही चेतावनी देता है–हम अपनी आत्मा में रहे ताकि पापकर्म रूपी वायरस से स्वयं को सुरक्षित रख सकें। प्रस्तुत आलेख में क्रोध रूपी वायरस की चर्चा करनी है। ठीक ही कहा है–

एक उल्लु ही काफी है, बर्बाद, गुलिस्ताँ करने को।
एक क्रोध ही काफी है, बर्बाद जीवन करने को।।

क्रोध खतरनाक वायरस है–

चीन की धरती पर बना एक कोरोना वायरस ने पूरे विश्व को मौत के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। प्रतिदिन हजारों-लाखों लोग कोरोना की चपेट में आ रहे हैं। ट्रीटमेंट से कई ठीक हो रहे हैं तो कई दुनिया से अलविदा। माना कि इस कोरोना में मानव के वर्तमन जीवन को खत्म करने की क्षमता है पर क्रोध रूपी वायरस की क्षमता शतगुणी है। कहते हैं, एकमात्र क्रोध इंसान के कई भवों को बिगाड़ सकता है। अतः इस वायरस से बचने के लिए प्रेम, वात्सल्य, स्नेह रूपी सेनीटाइजर का प्रयोग करते रहना चाहिए। दसवैकालिक सूत्र में भगवान महावीर ने कहा है–'कोहो पीइं पणासेइ' अर्थात् क्रोध प्रीति का नाश करता है। हम प्रीति से क्रोध को जीतें। क्रोध के मालिक बनें, गुलाम नहीं। आज मानव की जिंदगी यत्रवत् हो गई है। वह मशीन की तरह अपनी जिंदगी जीता है। मोबाइल तो मानो उसकी जिंदगी है। टचस्क्रीन ने उसके जीवन को भी प्रभावित किया है। जैसे मोबाइल को टल करने के साथ उसके साथ आइकोन बाहर आ जाते हैं, ठीक वैसे ही थोड़ी प्रतिकूल परिस्थिति टच होते ही मानव क्रोध रूपी सर्प की तरह फुँफकारने लगता है। किसी ने कुछ कहा, गाली दी या धक्का दिया, निमित्त मिलते ही भीतर की ज्वाला भभक उठती है। प्रतीत होता है इंसान क्रोध के वशीभूत हो गया है। एक तरह से वह क्रोध की गुलामी करने लग गया है।

बंधुओ! अब वक्त आ गया है, पर्युषण हमें जगाने की व मालिक बनने की प्रेरणा दे रहा है। आचार्य तुलसी ने कहा है–'जब जागो तभी सवेरा' अब देरी न करें हम क्रोध के मालिक बने जो जागृत है वही मालिक है। प्रसिद्ध घटना है–भगवान बुद्ध विहार करते हुए गाँव से गुजर रहे थे। गाँव वालों ने रोका, बुद्ध को बहुत गालियाँ दी पर वे शांत मुद्रा में खड़े रहे। जब गाँव वाले चुप हुए तब बुद्ध ने कहा–मित्रों! तुम्हारी बातें पूरी हो गई हो तो मैं आगे जाऊँ। बुद्ध की बात सुन, लोगों को आश्चर्य हुआ। बुद्ध से पूछा हमने इतनी गालियाँ दी फिर भी आप शांत रहें, आपने क्रोध क्यों नहीं किया? बुद्ध बोले–आपको गालियाँ देने १० वर्ष पहले आना था। अब मैं जागृत हो गया हूँ, क्रोध का मालिक बन गया हूँ। मेरी आज्ञा के बिना क्रोध कोई प्रतिक्रिया नहीं कर सकता। दूसरी बात, मैं पिछले गाँव में था। स्वागत में लोग फल लेकर आए, मेरा पेट भरा हुआ था। मैंने फल नहीं लिए तब उन्होंने उपस्थित सब लोगों को फल बाँट दिए। वैसे ही मैंने तुम्हारी गालियाँ नहीं ली हैं, अब तुम्हें बाँटना हो उसको बाँट दो कहकर बुद्ध चले गए। पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हम इस आगमवाणी का जाप करें 'उवसमेण हणे कोह' परिणामतः हमारा क्रोध स्वतः ही उपशांत होता जाएगा।

हीरे की तरह ठंडा बनें–

जौहरी काँच व हीरा लेकर राज दरबार में आया। पूरा दरबार भरा हुआ था। जौहरी ने काँच व हीरा राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया और कहा–राजन्! हीरा एक करोड़ का है यदि आपने परख लिया तो हीरा आपका वरना आपको एक लाख मुझे देना पड़ेगा। राजा ने शर्त मान ली दोनों की परख करने लगे पर दोनों हू-ब-हू थे। कौन हीरा और काँच है, राजा परख नहीं पाए। शर्त हारने की तैयारी थी तभी एक अंधा आगे आया और कहा–राजन्! शर्त मत हारना। दोनों धूप में रख दो, परख हो जाएगी। राजा ने वैसा ही किया। धूप से जो गरम हो गया वह काँच था, जो ठंडा था वह हीरा। राजा ने बाजी जीत ली, हीरा भी जीत लिया।

क्रोधी आदमी काँच की तरह तुरंत गरम हो जाता है आचार्यश्री महाश्रमण जी की हमें सतत् प्रेरणा मिलती है–'साधक को हीरे की तरह ठंडी प्रकृति वाला होना चाहिए। हीरा हमेशा ठंडा रहता है इसलिए वह मूल्यवान है। जैसे काँच का कोई मूल्य नहीं होता वैसे ही क्रोधी व्यक्ति भी मूल्यहीन होता है। कई बार महिलाएँ बताती हैं, मेरे पति काँच की तरह हैं छोटी-छोटी बात पर गुस्सा करते हैं। गुस्सा खतरा है, हम खतरे से बचने का प्रयास करें। जीवन में प्रतिकूलता का आना Part of Life है पर हर स्थिति में उपशांत रहना Art of Life है।

क्रोध चुभने वाला कषाय है। क्रोध जहर है Feeling में नहीं, पर Knowing में। हमें दूसरों का क्रोध जहर व आग जैसा लगता है पर खुद का नहीं। अपेक्षा है हम स्वयं के क्रोध को पहचानें। इस आग को ऐसी राख में बदल दें कि कभी दोबारा उसमें आग न लग सके। हमें क्रोध को हराना नहीं है बल्कि जीतना है। सारी दुनिया दुश्मन को हराना सीखती है, लेकिन जिनवाणी दुश्मन को जीतना सिखाती है। उत्तराध्ययन सूत्र में उल्लेख है–

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू, जिणामहं।।

क्रोध शांति के उपाय–

(१) चंद्रभेदी प्रणायाम– १० मिनिट, (२) खेंचनी मुद्रा, महाप्राण ध्वनि, (३) दीर्घ श्वास प्रेक्षा, (४) शशांकासन, (५) ज्योति केंद्र पर सफेद रंग का ध्यान फिर अनुप्रेक्षा करें–(१) मैं शांत हूँ, (२) मेरा स्वभाव शांत है, (३) मेरा गुस्सा शांत हो गया है।

(नौ बार उच्चारण करें फिर नौ बार मन में बोलें जिससे यह संदेश हमारे अवचेतन मन तक पहुँच जाए।)

विश्वास है पर्युषण पर्व की साधना हमें क्रोध रूपी घातक वायरस से मुक्ति दिलाएगा। पर्युषण पर्व हमें हमारे भीतर के प्रदूषण को तब दूर करता है जब हम उदार भाव से उन लोगों को क्षमा करते हैं, उनसे क्षमा माँगते हैं जिनके साथ हमारा कटु व्यवहार हुआ है, बोलचाल बंद की है या फिर उनसे बैर की गाँठ भीतर में रखी है।

हम सब भव्य आत्माओं के प्रति शुभकामना करते हैं–सबका जीवन मंगलमय हो, आनंदमय हो, प्रत्येक जीव का दिन-प्रतिदिन आध्यात्मिक विकास हो।

ओम् अर्हम्।

सांस्कृतिक संध्या का आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत समिति दिल्ली द्वारा ७४वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'नैतिकता और देशभक्ति' पर आधारित रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के मंगलपाठ से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली विधानसभा के स्पीकर रामनिवास गोयल ने की। राष्ट्रीय अध्यक्ष अणुव्रत महासमिति अशोक डूंगरवाल मुख्य अतिथि, महामंत्री भीखम सुराणा विशिष्ट अतिथि एवं स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार के सीनियर सलाहकार गोपेंद्रनाथ भट्ट विशिष्ट अतिथि थे। अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष डॉ० पी०सी० जैन ने स्वागत, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने आभार, सुरेंद्र नाहटा ने अणुव्रत गीत व कार्यक्रम का परिचय मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने प्रस्तुत किया।

वैश्विक संकट के इस दौर में आचार्य तुलसी के आह्वान 'असली आजादी अपनाओ' के साथ देशभकित का जोश जगाए रखने और घर बैठे मनोरंजन ज्ञानवर्धन के साथ मानसिक स्वस्थता के उद्देश्य से आयोजित इस भव्य सांस्कृतिक संध्या की संयोजिकाद्वय अंशु जैन व प्रियंका महनोत के अथक परिश्रम से ५१ प्रतिभागियों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियाँ दी।

विशेष उल्लेखनीय प्रस्तुतियाँ रही। सिंगर रमेश जया जैन, राहुल बैद, साउथ दिल्ली ज्ञानशाला के विद्यार्थी, मनोज-निहारिका, नमन खटेड़, शौर्य निवेदिता लुनिया, नव्या बैंगाणी की परी महनोत व चंदा डूंगरवाल की। कुल मिलाकर ढाई घंटे तक निरंतर देशभक्ति और नैतिकता के साथ स्वदेशी अपनाओ, वोकल फोर लोकल और स्वस्थता के संदेशों की उच्च स्तरीय प्रस्तुतियों के साथ अणुव्रत दर्शन की शानदार अनूगूँज हुई।

✦ *जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के साधारण सभा के विविध आयोजन

पूर्वांचल

तेयुप की तृतीय वार्षिक साधारण सभा अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ की अध्यक्षता में जूम एप के माध्यम से आयोजित हुई। सर्वप्रथम मंत्री आलोश बरमेचा ने तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा की सबको बधाई दी। मंगलाचरण धीरज मालू ने किया। तत्पश्चात विजय गीत का संगान राजीव जैन ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन उपासक विजय बरमेचा और लक्ष्मी बरमेचा ने किया। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री का संदेश शाखा प्रभारी सुनील दुगड़ ने वाचन किया।

सहमंत्री संदीप सिंघी ने गत साधारण सभा की कार्यवाही का वाचन किया। अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ ने वक्तव्य में पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों, अपनी टीम और सदस्यों का स्वागत किया। मंत्री आलोक बरमेचा ने सत्र के मंत्री प्रतिवेदन सदन के सम्मुख रख।

कोषाध्यक्ष अजय छाजेड़ ने सत्र २०१६-२० के आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। रतनलाल श्यामसुखा ने सफलतम कार्यकाल की संपन्नता पर अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ को बधाई दी। आगामी सत्र हेतु सदन की सहमति से M/s जी गोयनका एंड एसोसिएट्स को अंकेक्षक नियुक्त किया गया। अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ ने कार्यकाल में योगदान हेतु सभी पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों को ई सर्टिफिकेट प्रदान किया। तत्पश्चात चुनाव अधिकारी संजय सिंघी ने सत्र-२०२०-२१ हेतु आलोक बरमेचा को अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित होने की घोषणा की। पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, मंत्री पंकज डोशी, महिला मंडल की अध्यक्षा अंजू दुगड़, मंत्री श्वेता डागलिया, अभातेयुप से यश रामपुरिया, अजय पिंचा, संदीप डागा, प्रवीण सिंघी, जेटीएन सहप्रभारी पंकज दुधेड़िया एवं परिषद परामर्शक नोरतमल बरमेचा, विशेष आमंत्रित सदस्य प्रमोद छाजेड़, जसवंत बरड़िया एवं अभातेममं की पूर्व महामंत्री, महासभा की सदस्या सुमन नाहटा ने नए अध्यक्ष को सफलतम कार्यकाल हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित की।

नवनियुक्त अध्यक्ष आलोक बरमेचा को उपासिका लक्ष्मी बरमेचा ने मंगलपाठ सुनाया। निवर्तमान अध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़ ने अध्यक्ष आलोक बरमेचा को तिलक लगाकर एवं उपस्थिति सभी साथियों ने साफा पहनाकर अभिनंदन किया। नव निर्वाचित अध्यक्ष आलोक बरमेचा ने इस नई जिम्मेदारी हेतु सभी से आशीर्वाद और सहयोग की कामना करते हुए कहा कि हम सबको साथ मिलकर परिषद को नई ऊँचाइयों पर ले जाना है। आभार ज्ञापन परिषद के उपाध्यक्ष पंकज नाहटा ने किया।

उधना

तेयुप, उधना की साधारण सभा का आयोजन तेरापंथ भवन, उधना में साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में जूम एप पर किया गया। साधारण सभा की शुरुआत तेयुप सदस्यों द्वारा सामुहिक मंत्रोच्चार से हुई। विजय गीत का संगान कपिल कावड़िया द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र वाचन पूर्व अध्यक्ष सुशील मेहता द्वारा किया गया। साधारण सभा की मिनट बुक का वाचन सहमंत्री पारस रांका ने किया।

अध्यक्ष संजय बोथरा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। सभी सहयोगी सभा-संस्थाओं के प्रति आभार ज्ञापित किया। वर्ष भर का आय-व्यय का ब्योरा कोषाध्यक्ष मनीष दक ने किया। चुनाव अधिकारीगण ने सत्र २०२०-२१ के लिए अरुण चंडालिया को सर्वसम्मति से तेयुप, उधना का अध्यक्ष मनोनीत किया। निवर्तमान अध्यक्ष संजय बोथरा, सभाध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, महिला मंडल अध्यक्षा श्रेया बाफना, महासभा उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना, गुजरात प्रभारी अनिल चंडालिया, सभा संरक्षक मोहन पोरवाड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष नेमीचंद कावड़िया, अभातेयुप सदस्य सुभाष चपलोत, राष्ट्रीय किशोर मंडल प्रभारी अर्पित नाहर आदि सभी सदस्यों ने आगामी कार्यकाल की मंगलकामना दी।

साध्वी सम्यक्प्रज्ञा जी ने उद्बोधन एवं मंगलपाठ से अपनी मंगलकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर अभातेयुप के केंद्रिय पर्यवेक्षक के रूप में निर्मल बैंगानी, परिषद प्रभारी दिनेश बुरड़, उधना तेयुप के समस्त सिरमोर (पूर्व अध्यक्षों) की विशेष उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन निवर्तमान कोषाध्यक्ष मनीष दक ने किया। संचालन मंत्री ललित चंडालिया ने किया।

गुवाहाटी

तेयुप की साधारण सभा अध्यक्ष विनोद बोरड़ की अध्यक्षता में जूम एप पर प्रारंभ हुइ। अभातेयुप जैन संस्कारक बाबूलालसुराणा ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। विजय गीत का संगान कार्यकारिणी सदस्य विनीत चिंडालिया ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप शाखा प्रभारी सुनील दुगड़ ने किया। गत बैठक के कार्यवाही विवरण का वाचन मंत्री हेमंत सेठिया ने किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में अध्यक्ष विनोद बोरड़ ने सभी का स्वागत किया। सभा में उपस्थित अभातेयुप अध्यक्ष संदीप कोठारी ने तेयुप, गुवाहाटी द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की प्रशंसा की। अभातेयुप महामंत्री मनीष दफ्तरी ने कहा कि परिषद को अपने कार्यों में गति प्रदान कर श्रेष्ठ परिषद के रूप में उभरे। शाखा प्रभारी सुनील दुगड़ ने कहा कि परिषद अब स्थायी कार्यों जैसे एटीडीसी खोलने में ध्यान दे। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कोटेचा, स्थानीय तेरापंथी सभा के मंत्री अशोक सेठिया, स्थानीय महिला मंडल अध्यक्ष रंजु खटेड़, अणुव्रत समिति कोषाध्यक्ष एवं जेटीएन प्रतिनिधि संजय चोरड़िया ने वर्तमान अध्यक्ष एवं उनकी टीम को सफल कार्यकाल हेतु बधाई दी।

मंत्री हेमंत सेठिया ने अपने प्रतिवेदन में गत वर्ष परिषद द्वारा आयोजित मुख्य कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला एवं सभी का आभार व्यक्त किया। कोषाध्यक्ष विकास झाबक ने आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया।

चुनाव अधिकारी अजय भंसाली ने जानकारी दी कि आगामी सत्र २०२०-२१ के लिए अध्यक्ष पद हेतु एक ही नामांकन पत्र शेष रहा है। अतः उन्होंने सुजानगढ़ निवासी वीरेंद्र सेठिया (सुपुत्र सागरमल सेठिया) को आगामी सत्र के लिए अध्यक्ष घोषित किया। नवमनोनीत अध्यक्ष वीरेंद्र सेठिया ने सभी का आभार ज्ञापित किया। वित्तीय वर्ष २०२०-२१ के लिए सर्वसम्मति से सीए संतोष पुगलिया को मनोनीत किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री हेमंत सेठिया ने किया।

श्रावक प्रतिक्रमण कार्यशाला

उधना।

श्रावक को प्रतिदिन प्रतिक्रमण करना चाहिए। प्रतिदिन अपने दोषों को देखना चाहिए और सरल मन से क्षमायाचना कर खमतखामणा करना चाहिए। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती कृपा कर प्रतिक्रमण का नया रूप प्रदान किया है। अभातेयुप के निर्देशन में समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी ने जैन तवश्व भारती लंदन से ऑन लाइन क्लास लेकर प्रतिक्रमण के बारे में विस्तार से समझाया। अभातेयुप के निर्देशानुसार जूम एप के माध्यम से कोरोना काल में भारत सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों की अनुपालना करते हुए यह कार्यशाला ऑन लाइन आयोजित की गई।

अभातेयुप द्वारा इस कार्यक्रम की लिंक प्रेषित की गई, उसे तेयुप, उधना ने अधिक-से-अधिक श्रावमकों तक व्हाट्स एप व फेसबुक के माध्यम से पहुँचाया। इस ऑन लाइन कार्यक्रम को प्रचारित करने में प्रचार-प्रसार वैभव ढिलीवाल, सहप्रभारी दिव्यांश चंडालिया, कोषाध्यक्ष हेमंत डांगी, निवर्तमान मंत्री ललित चंडालिया एवं प्रचार-प्रसार की पूरी टीम का सहयोग रहा।

मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम

उत्तर हावड़ा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा का आयोजन जूम एप के माध्यम से आयोजित हुआ। सभी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने मंत्र दीक्षा जूम एप के माध्यम से अपने गंतव्य स्थान से लिया। सर्वप्रथम मंत्र दीक्षा का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल द्वारा किया गया। अभातेयुप महामंत्री अनंत वागरेचा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अनंत वागरेचा ने अपना वक्तव्य दिया एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक लक्ष्मीपत गोलछा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

सिलीगुड़ी ज्ञानशाला द्वारा मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया गया। उपासक विमल गुनेचा ने मंत्र दीक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात उपासक राजेंद्र सेठिया ने मंत्र दीक्षा की महत्ता बताई। कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन संयोजक अमित सेठिया ने किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

तेयुप, उत्तर हावड़ा ने पुनः निर्वाचित अध्यक्ष संदीप कुमार डागा के अथक प्रयास एवं उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला के संयोजक प्रदीप बैद, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की प्रेरणा से काफी संख्या में उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी कार्यक्रम में शामिल हुए मंत्र दीक्षा के संकल्पों को ग्रहण किया।

ग्रंथ और संत वाणी धारण कर कल्याण कर सकते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १२ अगस्त, २०२०

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि ठाणं आगम के सातवें अध्याय के ६८वें सूत्र में कहा गया है–शास्त्रकार ने दो काल की चर्चा की है। एक दुषमा काल और सुषमा काल। दुषमा काल के लक्षण क्या, पहचान क्या है? सुषमा काल की पहचान क्या है? इस पर शास्त्रकार ने प्रकाश डालने का प्रयास किया है। हमारी सृष्टि में काल की भी एक व्यवस्था है। एक कालचक्र बीस क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का होता है। उसके दो भाग और बारह अर हैं। चक्र हैं, चढ़ो फिर उतरो।

दो भाग में एक है–अवसर्पिणी काल। दूसरा है–उत्सर्पिणी काल। उत्सर्पिणी कालमें आरोह है, अवसर्पिणी काल में अवरोह हो जाता है। दोनों के छः-छः अर हैं। उत्सर्पिणी काल में अर हैं, उसमें पहला, दूसरा अर छोटा है। २१ हजार २१ हजार वर्ष का। तीसरा इनसे बड़ा एक क्रोड़ाक्रोड़ी सागर में बयांलीस हजार वर्ष कम का। चौथा दो क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का, पाँचवाँ तीन क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का और छठा चार क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का यों कुल दस क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का दूसरा तीन क्रोड़ा-क्रोड़ी का, तीसरा दो क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर का, चौथा एक क्रोड़ा-क्रोड़ी सागर में बयांलीस हजार वर्ष कम व पाँचवाँ, छठा २१-२१ हजार वर्ष का होता है। ये अरों के कालमान की दृष्टि से आरोह-अवरोह हो गया।

दूसरी दृष्टि से देखें कि उत्सर्पिणी काल में शुरू में मनुष्य की आयु कम है। सोलह वर्ष की, फिर बीस वर्ष की, फिर धीरे-धीरे बढ़ती हुई पल्योपम तक हो जाती है। अवसर्पिणी में इससे उल्टा होता है। शरीर की लंबाई-चौड़ाई में भी आरोह-अवरोह हो जाता है। यह आरोह-अवरोह का चक्र अनंत काल में चलता रहता है। ये एक कालचक्र होता है। अवसर्पिणी काल का पहला अर है–दूषम-दुषमा, दूसरा दुषमा, तीसरा दुषमा-सुषमा चौथा होगा-सुषम-दुषमा पाँचवाँ सुषमा और छठा सुषम सुषमा। अवसर्पिणी काल में छः आरे इससे उल्टे ही जाते हैं। सुषम-सुषमा से लेकर दुषम-दुषमा।

शास्त्रकार ने कहा है कि सात ऐसी बातें हैं, जिसमें दुषमा काल की पहचान की जा सकती है। यह अवसर्पिणी का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा अर है। दूसरा अर्थ है–पूरे काल को दो भागों में बाँट दें। एक दुषमा काल दूसरा सुषमा काल। तीसरा अर्थ मेरे समझ में आया दुषमा। दु यानी खराब, षमा यानी समय खराब समय। सुषमा यानी बढ़िया समय। वे सात बातें हैं–(१) दुषमा में अकाल बिना समय वर्षा हो जाती है। (२) समय पर वर्षा नहीं होती, दुष्काल पड़ जाता है। (३) असाधुओं की पूजा होती है। (४) साधुओं की पूजा नहीं होती। (५) व्यक्ति गुरुजनों के प्रति मिथ्या-अविनयपूर्ण व्यवहार करता है। (६) मन संबंधी दुःख होता है। (७) वचन संबंधी दुःख होता है। आदमी दुःखी रहता है। इनसे ठीक विपरीत शास्त्रकार ने सुषमा काल के लक्षण बताए हैं, वो भी सात ही हैं–(१) अकास में वर्षा नहीं होती। (२) समय पर वर्षा होती है। (३) असाधुओं की पूजा नहीं होती। (४) साधुओं की पूजा होती है। (५) व्यक्ति गुरुजनों के प्रति मिथ्या व्यवहार नहीं करता। (६) मन संबंधी सुख होता है। (७) वचन संबंधी सुख होता है।

इनमें कुछ बातें प्राकृतिक हैं। पाँच बातें मनुष्य से संबंधित हैं। काल का अपना क्रम है, परंतु आदमी को चाहिए कि जितना अच्छा कर सके, उतना अच्छा करने का प्रयास करें। काल का अपना प्रभाव हो सकता है। आज केवलज्ञानी तीर्थंकर इस भरत क्षेत्र में नहीं है। अनेक धर्म के मत-मतांतर चलते हैं। क्षपक श्रेणी वाला भी साधु नहीं है। साधु भी छठे-सातवें गुणस्थान तक के हैं। साधुओं के बारे में भी मान्यता भेद, परंपराभेद चल रहे हैं। निश्चय में तो केवलज्ञानी जाने कि कौन साधु, कौन असाधु, कौन भवी, कौन अभवी। केवली जाने वहीं सत्य है। अभवी भी साधु संस्था में दीक्षित हो सकता है। अभव्य ऊँचे स्थान पर भी आ सकता। हम तो व्यवहार से चलते हैं, व्यवहार से चलना भी हितकर हो सकता है। व्यवहार बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

हमें धर्म का जो जितना मार्ग मिल रहा है, हमारे पास ग्रंथ हैं, पंथ हैं और संत हैं ये भी भाग्य की बात है। इतनी सामग्री है, बढ़िया बात है। इतनी सामग्री से भी हमारा काम चल सकता है। कल्याण कर सकते हैं। हमें जैन धर्म में श्वेतांबर में तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त है। भिक्षु स्वामी जिसके पहले आचार्य हुए। गीत में सुंदर कहा गया है–दुषम आरे, भरत मझारे प्रगट्या भिक्षु स्वाम। अरिहंत देव ज्यू धर्म दिपायो, पायो जग में नाम।'। प्रहकाम परम ने समरूँ। हम भाग्यशाली हैं कि हमें धर्म का रास्ता मिल गया। दुनिया में कितने लोग हैं, जो धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रखते। कितने-कितने लोग धर्म श्रवण कर रहे हैं। पाँचवें आरे में भी ये धर्म का माहौल मिल रहा है, ज्यादा निराशा की बात नहीं है। यहाँ साधना कर लें तो आगे देवलोक मिल सकता है। आशा करें बाद में महाविदेह में जाकर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। जैसा समय है खूब तपस्या, ज्ञान, ध्यान, साधना करें तो आत्मोन्नति की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

मुनि दिनेश कुमार जी ने समय का सदुपयोग कैसे करें, इस बारे में समझाया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

साभार : अमृतवाणी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - विमल कटारिया द्वारा जे.के. ऑफसेट, 17, डी.एस.आई.डी.सी. रोहतक रोड, नांगलोई, दिल्ली से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित।